Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 4, July-2021, ISSN 2230-7540

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा का प्रभाव

Pradeep Kumar Kushwaha[1]*, Dr. Pradeep Kumar[2]

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

[2] Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सार - यह पेपर महिला सशक्तिकरण में शिक्षा के प्रभाव का विश्लेषण करने और महिला सशक्तिकरण की चिंताओं और चुनौतियों पर प्रकाश डालने के लिए है। आज 21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण चिंताओं में से एक समाज में महिलाओं का सशक्तिकरण है। महिला सशक्तिकरण विभिन्न चरों पर निर्भर है जिसमें भौगोलिक स्थिति, शैक्षिक स्थिति, सामाजिक स्थिति और आयु शामिल हैं। उस से शिक्षा विकास की स्वतंत्रता को मुक्त करने की कुंजी है। हम अपने जीवन में निगरानी करते हैं कि विभिन्न सामाजिक नुकसानों से महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। इतिहास ने साबित कर दिया है कि यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, लेकिन यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो आप एक राष्ट्र को शिक्षित करते हैं।" एक महिला को शिक्षित करने से आत्म सम्मान और आत्मविश्वास आता है। यह उसके समाज में सक्रिय भागीदारी को भी बढ़ावा देता है। महिलाओं को शैक्षिक नीति निर्णय लेने की प्रक्रिया में अधिक शामिल होने की आवश्यकता है। इसलिए यह लेख महिलाओं के सशक्तिकरण पर शिक्षा के प्रभाव के साथ-साथ उन परिवर्तनों को सुधारने के सुझाव पर चर्चा करता है जिन पर महिला सशक्तिकरण के लिए विचार करने की आवश्यकता है।

खोजशब्द - महिला सशक्तिकरण, मुद्दे और चुनौतियां, शिक्षा।

----------X----------

प्रस्तावना

महिला सशक्तिकरण:

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक समूह और लिंग आधारित असहिष्णुता की क्रूर पकड़ से महिलाओं की स्वतंत्रता। इसका अर्थ है महिलाओं को जीवन को भरपूर बनाने की आजादी देना। महिला सशक्तिकरण लैंगिक समानता तक पहुँचने में एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसका अर्थ है "व्यक्तियों के विशेषाधिकार, जिम्मेदारियाँ और अवसर इस बात पर निर्भर नहीं होंगे कि वे पुरुष या महिला पैदा हुए हैं या नहीं"।

सशक्तिकरण के विभिन्न तरीके:

व्यक्तिगत अधिकार: व्यक्तिगत सशक्तिकरण का अर्थ है आत्म-विश्वास को सुसंगत बनाना और चर्चा और निर्णय लेने की शक्ति पर जोर देना।

सामाजिक महिला सशक्तिकरण: महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है।

शैक्षिक महिला सशक्तिकरण: इसका अर्थ है विकास प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास के साथ महिलाओं को सशक्त बनाना। इसका अर्थ है महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना और उन पर दावा करने का आत्मविश्वास विकसित करना।

आर्थिक और व्यावसायिक सशक्तिकरण: इसका अर्थ है अपने पुरुष समकक्षों को मानव संसाधन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाकर उनकी वित्तीय निर्भरता को कम करना।

कानूनी महिला सशक्तिकरण: यह एक प्रभावी कानूनी ढांचे की शर्त का सुझाव देता है जो महिला सशक्तिकरण का समर्थन करता है।

www.ignited.in

राजनीतिक महिला सशक्तिकरण: इसका अर्थ राजनीतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया और शासन में महिलाओं की भागीदारी और नियंत्रण के पक्ष में एक राजनीतिक व्यवस्था का अस्तित्व है।

भारत में महिलाओं की स्थिति:

समाज में महिलाओं की भूमिका: आधुनिक महिलाएं सामाजिक मुद्दों की ओर प्रवृत्त हैं, और बड़े पैमाने पर महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार करने के लिए कड़ी मेहनत कर रही हैं। बढ़ती जागरूकता और शिक्षा ने महिलाओं को घर की चारदीवारी से बाहर निकलने के लिए प्रेरित किया है। कई महिलाओं ने सक्रिय रूप से समर्थन किया और राष्ट्रवादी आंदोलन में भाग लिया और स्वतंत्र भारत में प्रशासन और सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठित पदों और पदों को हासिल किया। परंपरागत रूप से भारतीय महिलाएं परिवार और परिवार के लिए मौजूद हैं।

एक पत्नी के रूप में महिला: एक पत्नी के रूप में महिला को आदर्श रूप से अपने पति के समान दर्जा प्राप्त था और वह सामाजिक और जैविक दोनों प्रकार के कार्यों को करती थी। पति-पत्नी के संबंध चरित्र में अधिक समानतावादी और अधिक सहयोगी बन गए हैं। विवाह में पसंद की अधिक स्वतंत्रता इस प्रकार परिवार के रूप में परिवर्तन की संगत है।

राजनीति में महिलाओं की भूमिका कुछ लोग स्वयं को राजनीतिक दलों के सदस्य के रूप में नामांकित कर रहे हैं, पार्टी की बैठकों, सम्मेलनों में भाग ले रहे हैं और राजनीतिक कार्यक्रम कर रहे हैं। कुछ महिलाएं स्वयं का प्रभावशाली राजनीतिक कद प्राप्त कर रही हैं और समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए जनमत को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं।

सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी: आधुनिक समय में महिला कुछ नए क्षेत्रों में प्रवेश कर रही है जो महिला के रोल-सेट के क्षेत्र से अनजान थे। ये आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी हैं।

अनुशंसाएँ:

प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर, यह पत्र सरकार से देश में शैक्षिक विकास लाने के लिए निम्नलिखित उपाय करने का आह्वान करता है।

1. ज्ञान वृद्धि के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना और शिक्षा का पूरा उपयोग करना।
2. उत्पादकता और सामाजिक विकास को बढ़ाने के लिए महिलाओं के स्वास्थ्य को शिक्षित और बनाए रखना।
3. महिलाओं के हितों की बेहतर सुरक्षा और गुणवत्तापूर्ण शासन प्राप्त करने के लिए सरकारी ढांचे के विभिन्न निर्णय लेने वाले स्तरों में महिलाओं को सशक्त बनाना और उन्हें उचित प्रतिनिधित्व प्रदान करना।
4. महिलाओं को देश के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और अन्य क्षेत्रों में सक्रिय भागीदार बनाने के अधिकारों की रक्षा करना, जिससे विकास हो सके।
5. सतत विकास लाने के लिए पर्यावरण की रक्षा करना, क्योंकि पर्यावरण देश की अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्रोत है।

चुनौतियां:

1. पुरुषों के बीच अंतर्निर्मित शासन परिसर के कारण, वे अक्सर अपनी महिला प्रतिपक्ष को उनके जितना ऊंचा उठने की अनुमति नहीं देते हैं।
2. उच्च स्तर की पारिवारिक जिम्मेदारियां
3. सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए सीमाएं
4. हमारे समाज में बालिकाओं की तुलना में लड़के को अक्सर शिक्षा और स्वस्थ आहार के लिए प्राथमिकता दी जाती है
5. समाज में कई परिवारों में अभी भी लड़के को वरीयता दी जाती है।

समाधान

1. जनसंचार के माध्यम से शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और अभ्यास करने के लिए महिलाओं और पुरुषों दोनों को उनकी जिम्मेदारियों से अवगत कराया जाना चाहिए।
2. राष्ट्रीय डेटा एकत्र करें और उन क्षेत्रों की पहचान करें जहां हिंसा और लैंगिक असमानता का एक उदाहरण सबसे अधिक है। इस डेटा का इस्तेमाल सरकार कर सकती है। महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाने के लिए एनजीओ और फील्ड वर्कर
3. शिक्षा के माध्यम से समाज को जागरूक किया जाना चाहिए कि लड़का-लड़की दोनों समान हैं और उन दोनों की संसाधनों तक समान पहुंच होनी चाहिए।

www.ignited.in

महिला सशक्तिकरण की विशेषताएं।

1. महिला सशक्तिकरण महिलाओं को शक्ति दे रहा है। यह महिलाओं को बेहतर बना रहा है। यह महिलाओं के बीच अधिक आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की भावना को सक्षम बनाता है।
2. महिला सशक्तिकरण महिलाओं के अधिकारों को समझने और अपने और दूसरों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को सबसे प्रभावी तरीके से निभाने के लिए शक्ति प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है।
3. महिला सशक्तिकरण महिलाओं को अपनी आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए खुद को संगठित करने में सक्षम बनाता है और यह अधिक स्वायत्तता प्रदान करता है।
4. महिला सशक्तिकरण का अर्थ है भौतिक संपदा, बौद्धिक संसाधनों और विचारधारा पर महिलाओं का नियंत्रण।
5. महिला सशक्तिकरण समाज के सभी संस्थानों और संरचनाओं में सभी लिंग आधार भेदभाव को समाप्त करता है।
6. महिला सशक्तिकरण का अर्थ है मौजूदा लैंगिक सामाजिक संबंधों की दमनकारी शक्तियों को उजागर करना।
7. महिला सशक्तिकरण महिलाओं को जीवन की चुनौतियों का सामना करने, अक्षमताओं, बाधाओं और असमानताओं को दूर करने के लिए और अधिक शक्तिशाली बनाता है।
8. प्रथागत विश्वास और अभ्यास द्वारा उन पर लगाए गए बंधनों से उनकी योजना बनाने की अधिक क्षमता और स्वतंत्रता का निर्णय लेना।
9. महिला सशक्तिकरण एक सतत गतिशील प्रक्रिया है जो महिलाओं की संरचना और विचारधाराओं को बदलने की क्षमता को बढ़ाती है जो उन्हें अधीनस्थ रखती हैं। महिला सशक्तिकरण जागरूकता पैदा करने और क्षमता निर्माण की एक प्रक्रिया है।

अध्ययन के निष्कर्ष

शिक्षा मुक्त करती है : शिक्षा मन को मुक्त करती है। किताबें जो शिक्षित करती हैं, हमारे दिमाग को उन जगहों, लोगों और संभावनाओं के लिए खोलती हैं जिनके बारे में हमने कभी सोचा भी नहीं था। अतः शिक्षित स्त्री भी मुक्त स्त्री होगी।

शिक्षा बाधाओं को तोड़ती है: शिक्षा हमें सभी बाधाओं को तोड़ने में सक्षम बनाती है- धार्मिक, भाषाई, सांस्कृतिक, राजनीतिक, लिंग और भौगोलिक।

शिक्षा पसंद के विशेषाधिकार की अनुमति देती है: शिक्षा उन्हें गलत और सही के बीच भेद करना और जीवन में सही चुनाव करना सिखाएगी।

शिक्षा जुटाती है: शिक्षा महिलाओं को उन सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करेगी जो अभी भी भारतीय समाज को प्रभावित करती हैं।

शिक्षा से होती है आजादी: आज की ज्यादातर युवा, शिक्षित महिलाएं अपने आप में आ रही हैं। वे जैसा चाहते हैं, वैसे ही जीते हैं, वे जिसे पसंद करते हैं उसे डेट करते हैं, उन्होंने अपने जीवन साथी को भी चुना और बाकी सभी चीजों के बारे में।

शिक्षा करियर चुनने में मदद करती है और वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करती है: यह मेरे पिछले बिंदु का विस्तार है। शिक्षा, आज, महिलाओं को पारंपरिक रूप से उनके लिए अच्छे माने जाने वाले व्यवसायों से परे जाने में सक्षम बना रही है, जैसे कि चिकित्सा, नर्सिंग, शिक्षण, लाइब्रेरियन आदि। आज, महिलाएं मॉडल, अभिनेता, लड़ाकू पायलट, जिम प्रशिक्षक, पुलिस, लेखक, इंजीनियर, वास्तुकार बन रही हैं। पत्रकार, वैज्ञानिक, कॉर्पोरेट, कानून, फिल्म निर्माण और क्या नहीं- वे शीशे की छत तोड़ रहे हैं।

एक शिक्षित महिला अर्थव्यवस्था में योगदान करती है: एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना करें जहां महिलाएं योग्य हों और नौकरी पाने में सक्षम हों। कार्यबल में योगदान से उत्पादन में वृद्धि होगी, और इसलिए, अर्थव्यवस्था का विकास होगा। और मैं न केवल उद्योगों और निगमों के बारे में बात कर रहा हूं, बल्कि स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा क्षेत्र, कला, विज्ञान, साहित्य आदि के बारे में भी बात कर रहा हूं।

सुझाव

1. महिलाओं की शिक्षा को पहली और अग्रणी प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जो कि जमीनी समस्या है। इसलिए महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

www.ignited.in

2. महिलाओं में जागरूकता पैदा करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता है।
3. महिलाओं को काम करने की अनुमति दी जानी चाहिए और उन्हें काम करने के लिए पर्याप्त सुरक्षा और सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
4. समाज में प्रचलित कुप्रथाओं को नियंत्रित करने के लिए कार्यक्रमों और अधिनियमों का सख्त क्रियान्वयन होना चाहिए।

उपसंहार

सभ्यता में महिलाओं की भागीदारी के बिना नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। महिलाओं को अपनी शिक्षा और करियर के अवसरों का अभ्यास करना चाहिए। जब महिला सशक्त होती है तो इसका मतलब है कि पूरा परिवार सशक्त होता है और समग्र समाज सशक्त होता है। सशक्तिकरण में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्हें बेहतर जीवन स्तर के लिए अपने लिए लड़ना चाहिए और उन्हें अपने फैसले खुद करने चाहिए। राष्ट्रीय विकास में महिला सशक्तिकरण एक आवश्यक तत्व है। चूंकि महिलाओं की आबादी आधी है, इसलिए कोई भी विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक महिलाओं की जरूरतों और हितों को पूरी तरह से ध्यान में नहीं रखा जाता है। महिलाओं के संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन और विकास, उनकी क्षमताएं, रुचियां, कौशल और क्षमताएं मानव संसाधन जुटाने के लिए सर्वोच्च महत्व की हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1. सुगुना एम। (2011)। भारत में शिक्षा और महिला सशक्तिकरण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च: वॉल्यूम। 1. अंक 8.

2. शिन्दु जे. (2012)। शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण। अभिनव जर्नल: वॉल्यूम। 1. अंक- 11. पी. 3.

3. के. महालिंगा। (2014)। पंचायत राज संस्थाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण। इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च: वॉल्यूम। 3. अंक 3.

4. चिब्बर बी (2010)। महिलाएं और भारतीय राजनीतिक प्रक्रिया। मेनस्ट्रीम वीकली जर्नल: वॉल्यूम। XLVIII। अंक 18.

5. भट टी. (2014) भारत में महिला शिक्षा की आवश्यकता है। ह्यूमन राइट्स इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल: वॉल्यूम। 1 पी.3.

6. डॉ. (श्रीमती) राजेश्वरी एम. शेट्टर, (2015)-भारत में महिला सशक्तिकरण के मुद्दों और चुनौतियों पर एक अध्ययन- आईओएसआर जर्नल ऑफ बिजनेस एंड मैनेजमेंट। 13-19

7. मनीषा देसाई, (2010/14) महिला अधिकारिता और मानव विकास, यूएनडीपी

8. 8. अमतुल वारिस, बी.सी. विरक्तमठ (2013) - जेंडर गैप्स एंड वूमेन्स एम्पावरमेंट इन इंडिया - इश्यूज एंड स्ट्रैटेजीज ', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड रिसर्च पब्लिकेशन। आईएसएसएन 2250-3153

9. डॉ. रीता खत्री (2016) भारत में महिला सशक्तिकरण की दिशा में शिक्षा की भूमिका , उन्नत अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, (550-555) डीओआई: 10.21474/IJAR01/2117

10. ईवा एरिकसन, "महिला सशक्तिकरण और सतत विकास के लिए इसके लिंक" नीति विभाग सी: नागरिक अधिकार और संवैधानिक मामले यूरोपीय संसद बी -1047 ब्रुसेल्स।

11. एंडलकाचेव बायेह (2016) इथियोपिया के नागरिक शास्त्र और नैतिक अध्ययन विभाग, सामाजिक विज्ञान और मानविकी कॉलेज, अंबो विश्वविद्यालय, अंबो, इथियोपिया प्रशांत विज्ञान समीक्षा बी: मानविकी और के सतत विकास के लिए महिलाओं को सशक्त बनाने और लैंगिक समानता प्राप्त करने की भूमिका सामाजिक विज्ञान 2 (2016) ।

Corresponding Author

Pradeep Kumar Kushwaha*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

www.ignited.in